जैनकथासंग्रह

शीलकथा।

चौपई—प्रथमहिं प्रनमों श्रीजिनदेव। इंद नरिंद करें तिन सेव॥ तीन लोकमें मंगलरूप। ते बन्दौं जिनराज अनूप॥ पंच परमगुरु वंदन करौं। करम कलंक छिनकमें हरौं॥ बन्दौं श्रीसरसुतिके पांय। जनम सुफल जासों हो जाय॥ शीलकथा मैं कहौं वखान। शील बडौ जगमें परधान॥ शीलसमान और नहिं जान। शीलहिसे जप तप व्रत दान॥ शील विना निरफल अधिकार। शील विना झूठा विवहार॥ शीलप्रतिज्ञा मनोरमा लई। सरस कथा ताकी यह भई॥ तातैं शील गहौ सब कोय। शीलहि सार जगतमें होय॥ जम्बुदीप दीपनमें सार। लख जोजन ताको विसतार॥ मध्य सुदर्शन-

मेरु बखान । भरतछेत्र दच्छिन दिश जान ॥
कौशल देश वसै शुभ सार । नगरी विजयन्ती
अधिकार ॥ सो नगरी महिमा को कहै । स्व-
र्गपुरी सम शोभा लहै ॥ द्वादश कोटतनो वि-
सतार । वसै नगर अति ही सुखकार ॥ बाग ब-
गीचनकर रमनीक । सब विधि नगरि बनी अ-
ति ठीक ॥ चौपरके जहं बने बजार । हीरा र-
तन होत व्यवहार ॥ जामें वसें छतीसों कुरी ।
निज निज भाग सबै सुख भरी ॥ तिस नगरी
कौ भूप महन्त । पदमसेन सो नाम कहंत ॥ कं-
चनमाला ताघर नार । सो जानो गुनवती अ-
पार ॥ राजा राज करै सुप्रचंड । अरिजनपै ली-
नो बहु दंड ॥ साधर्मीसे प्रीति जु करै । न्याय
नीतिसे नित पग धरै ॥ जाके राज्य दुखी नाहिं
कोय । सर्व सुखी दीखैं भवि लोय ॥ ताही न-
गर सेठ सुविशाल । ताको नाम कह्यो महिपाल ॥
पूरव पुन्य उदै भयो सोय । ताके घर लछमी
बहु होय ॥ धुजा छियानवै फहरैं सार । जाकें

छ्यानवे कोट दिनार॥ पुन्यथकी किम किम नहिं होय। पुन्यसमान और नहिं कोय॥ तातैं पुन्य करो बुधवान। जातैं बढै अधिक धन ज्ञान॥ जो बहु सुखकी इच्छा करौ। तो प्रति दिवस पुन्य चित धरौ॥ दोहा—

पुन्य हरै सब व्याधिको, काटत जमकी-फांस।
तातैं सब नर नारि हो, कीजे पुन्य सुवास॥

छंद—मानो घर कमला वासो। लीनो ताकैं अति खासो॥ वनमाला ताघर नारी। गुन शीलवंत अधिकारी॥ ताकैं शुभ गर्भ रहौ जू। नवमास व्यतीत भयौ जू॥ जनम्यो तब सुत सुखकारी। मनो देव लियो अवतारी॥ तब सेठ बधाई कीनी। बहु द्रव्य खरच कर दीनी॥ जाचक जन दान जो दीनो। सज्जन सनमान सो कीनो॥ जिनभवन सो पूज रचाई। वसु विधिसों द्रव्य चढाई॥ युवती बहु मंगल गावैं। अधिको आनन्द बढावैं॥ घर घरसे बधावा लीनों। सब जन मिलि मजलिस कीनों॥ त-

वहीं पंडित बुलवायो। सुखानन्द सो नाम धरायो॥ बहु भांति करै को बडाई। जाने एक भुजा उखराई॥ सो द्रव्य खरच सब दीनो। अरु खूब महोत्सव कीनो॥ अब दिन दिन बढत कुमारा। जिमि दोयज चंद जु सारा॥ वर्ष पांच तनों जो भयोजू। मुनि पास पढनको गयोजू॥ व्याकरण कोश लंकारा। लीलावति आदिक सारा॥ पुनि सो षट महिनामाहीं। सब विद्या ताहि पढाहीं॥ पढि पुत्र तात घर आयो। सुनि सेठ महा सुख पायो॥ यह कथा यहां ही रहीजू। अब आगे और भई जू॥ सो सुनियो सब नर नारी। अपने मन माहिं विचारी॥ ताके सुनते भ्रम नाशै। शुभ ज्ञानकला परकाशै॥

दोहा—

पच्छिम दिशा पुनीत है, नगर उजैनी थान।
सब प्रकार सब विधि सुलभ, सबकें होत पुरान॥

चौपाई—मालव देश वसै शुभ सार। नगर उजैनी कह्यो अधिकार॥ ता नगरी महिमा को

कहै। अमरपुरी सम शोभा लहै ॥ द्वादश जो-
जनको विसतार। वसै नगर अति ही सुखकार ॥
सब शोभा बरनन को कहै। बाढै कथा अंत
ना लहै ॥ ताही नगर सेठ इक जान। महीदत्त
तसु नाम वखान ॥ पूरव पुन्य उदय अब सोय।
ताके घर लछमी वहु होय ॥ शिरीमती ताके
घर नारि। शीलवंत गुनकी अधिकारि ॥ एक
सुता ताके अवतरी। मनोरमा जानो गुनभरी ॥
बहुविधि रूप कला परवीन। सुरकन्या कीनी
छविहीन ॥ तासम रूप और नहिं कोय। मानो
यक्ष कुमारी होय ॥ जबहीं आठ वरसकी भई।
निमती पास पढनको गई ॥ सो षट माहिना भी-
तर सार। विद्या सर्व पढी अधिकार ॥ षोडश
वरषतनी जब भई। तबै तात मन चिंता लई ॥
पुत्री भई व्याहके जोग। ताको कीजै शुभ सं-
योग ॥ मनमें ऐसे करै विचार। सुन्दरि सुर-
कन्या अवतार ॥ देवसमान कुंवर जंह होय।
तहं ढूंढों जाके अब सोय ॥ मो समान जो है

धनवान । ताकहं परनों सुता निदान ॥ इहि-विधि मनमें करत विचार । आगे और सुनो विसतार ॥

दोहा—अजमाइसके कारने, गढवायो इकहार ।
घनी द्रव्य जामें लगी, द्वादशकोट दिनार ॥

सोरठा—

मनमें करत विचार, मोसम जो नर होयगा ।
मोल लेय यह हार, ताको कन्या देहुंगो ॥

चौ०—तबही विप्र लियो बुलवाय । तासों ऐसी कहि समझाय ॥ हार लेहु करमें अब सोय । देश देश फिर आओ जोय ॥ जो कोउ याकी कीमत करै । द्वादश कोट दिनार जो धरै ॥ ताके सुन्दर पुत्र जो होय । ताको दीजो पुत्री सोय ॥

दोहा—कीमतही करवायके, द्रव्य न लीजै सार ।
ताही वरको सो वहां, टीका कीजे हार ॥

चौपई—सेठ हुकम तब सिरपर धरो । सो अब विप्र गमन अनुसरो ॥ देश देश फिर आयो सोय । कीमत हार करै नहिं कोय ॥ फिरत फि-

रत जब बहु दिन गये । षट महिना जो बीतत भये ॥ बहुत बात को कहै बढाय । आगे और सुनो मन लाय ॥

चाल छंद—भ्रमतो भ्रमतो वह आयो । सब कौशल देश मँझायो ॥ नगरी विजयंती माहीं । आयो ततछिन सो तहांहीं ॥ तहं देखि नगर सुखकारी । मनो स्वर्गपुरी अवतारी ॥ कहुं मानिक मोती झलकें । कहुं मोतिन झालर मलकें ॥ तब मनमें विप्र विचारी । यह तो नगरी सुखकारी ॥ यहां काज होय तो होई । नातर दीखै नहिं कोई ॥ धनपाल सेठ इक जानो । पहुंचौ सो ताकी दुकानो ॥ तिहिकों यह हार दिखायो ताने तब मोल करायो ॥ तब द्वादश कोड दिनारा । भाषौ द्विज मोल जु हारा ॥ फिर सेठने ऐसी कहीजू । घड़ी चार जो विलमों यहीं जू ॥ जौलौं हार घरै दिखराई । फिर तुमको ज्वाव कराई ॥ तब विप्रने हार जो दीनो । धनपाल तबै गह लीनो ॥ पर सेठ कपट मनमाहीं । प्रोहित कछु जानत नाहीं ॥

दोहा ।

होनहार होकें रहै, जिसबिधि जाकी होय ।
सो अनास ही होत है, मेट सकै नाहिं कोय ।

चौपई—तुरतहिं निज घर पहुंच्यो जाय । निज तियसों ऐसें बतराय ॥ लच्छि विधाता भेजी सार । सो अब धरिये गेहमंझार ॥ सांच मणीको घर घर लेहु । झूठे मणिको हमको देहु ॥ सो अब वाकों दीजे हार । क्या जाने वह मूढ गमार ॥

गीताछंद—ऐसे जो ताकी नारि बोली, बात पिय सुन लीजिये । यह बात तो अति होय खोटी, ऐसि चित्त न दीजिये ॥ जैसी जु मनमें तुम विचारी, रंक तैसी ना करै । इस बातमें कछु सार नाहीं, वृथा अपजस सिर परै ॥ परधनसों धन कछू होत नाहीं, जो लिखी निज भालमें । सोही मिलै भरतार मेरे, जो उदय है हालमें ॥ यह बात जो कहूं भूप सुन है, दंड दे है अधिक ही । अरु गांठहूकी द्रव्य जैहै, मानि पिय मेरी कही ॥

दोहा।

बहुप्रकार समझायकें, दोउ कर जोरे नारि।
पिया बात सुन लीजिये, परधन विषसम टारि॥

चौपई—इहि विधिसों समझायो नार। एक न मानी मुगध गमार॥ फिर नारी सों ऐसी कही। आखिर अबला जात सो सही॥ औगुन आठ सदा उर रहै। मरम भेद कछु जानि न कहै॥ फेर नारि तब ऐसी कही। हो भरतार सुनो तुम सही॥ आखिर वचन हमारे कंत। याद करोगे फेर तुरन्त॥ तातें समझो अब मनमाहिं। ऐसी बात जोग तुम नाहिं॥

दोहा—

इस विधिसों समझाइयो, सो कुलवंतीनार।
पापी नहिं मानी कही, और सुनो विसतार॥
होनहारके जोगतें, उपजी कुमति कुभाय।
नारि-सीख मानी नहीं, करन लग्यो अन्याय॥

चौपई—मनिमय हार धरो जो छिपाय। झूठे मनिको लियो उठाय॥ जाय विप्रसों ऐसी

कही । हमरी बात सुनो तुम सही ॥ रे रे ठ-
गिया मुगध गमार । तू तो ठगत फिरत संसार ॥
पांच दिनार जो कीमत होय । द्वादश कोट
सुनावै मोय ॥ लेके भाज जाहु यह हार । नातर
सुन लै है भूपार ॥ बहुत दंड दे है अब सोय ।
मैं जु दयाकर छोडूं तोय ॥ इतनी सुनकर प्रो-
हित जबै । मनमें रुदन करत अति तबै ॥
किहिकी सगाई किहिको व्याह । अधपर मरन
भयो दुखदाय ॥ फिर पहुच्यो वह मध्य बजार ।
ताने खेंच जु करी पुकार ॥ कहै पुकार पुकार
जो सोय । जाकी टेर सुने नहिं कोय ॥ यह तो
रीति जगतके मांय । सो नर नार सुनो मन
लाय ॥ लछमीवान पुरुष जो होय । ताहि न
चोर बतावै कोय ॥ निरधनसों सब तसकर
कहें । ऐसी रीत जगतमें लहें ॥ सेठहि चोर कहै
नहिं कोय । विप्रहिं चोर बतावै सोय ॥ भोजन
पान त्याग कर दियो । एक दिना इमि बीतत
भयो ॥ रोवत रोवत करत पुकार । प्रोहित प-

हुंच्यो नृप दरबार ॥ हो महाराज अरज सुन लेहु । हमरी विपदापर चित देहु ॥ तुम्हरे नगर सेठ धनपाल । सो सब ठगियनको भूपाल ॥ मनिमय हार छिपायो सोय। झूठे मनिको दीनों मोय ॥ तातैं न्याय करो भूपाल। नातर प्रान तजौंगो हाल ॥ इतनी सुनकर भूपति जबै। डौंडी नगर फिराई तबै ॥ जौंहरि शाह जुरे सब आय । अरु धनपालहिं लियो बुलाय ॥ मंत्री आदि जुरे परधान। बैठी सभा सुनृपति महान ॥ मंत्रीसों तब भूपति कही । याकौ न्याय करो तुम सही ॥ ऐसो न्याय करो अब सोय । जातें मो अपजस नहिं होय ॥ इतनी सुनकर मंत्री कही । भो महाराज सुनो तुम सही ॥ गूढन्याय है नरपति सोय। याकी साख सनद नहिं कोय ॥ सेठहिं चोर बतावें अबै । जौंहरि दुखें नगरके सबै ॥ विप्रहिं चोर बतावैं हाल। तो वह प्रान तजै ततकाल ॥ तातैं सुनो भूप तुम सोय । हम बूतें यह न्याय न होय ॥

तब भूपति फिर ऐसे कही । फिर को न्याय करै यह सही ॥ तव मंत्रीश कहै कर जोर । हो महाराज सुनो तुम और ॥ तुम्हरे नगर बसै महिपाल । जाकें छिनवै कोट दिनार ॥ सो वैठो तुम्हरे दरबार । याको सुत सुखानंद कुमार ॥ घर बैठो आयो नहिं सोय । और लोग सब हाजिर होय ॥ इतनी सुनकर भूपति कही । ताहि कचहरी लाओ सही ॥ तब महिपाल कहै कर जोरि । हो महाराज सुनो जु बहोरि ॥ विन आदर वह आवै नहीं । यह निश्चयकर जानों सही ॥ तब ही भूपति ऐसी कही । सहित सुआदर लाओ सही ॥

गीताछंद—सुखपाल और सवार जाको, सुभग सोम पठायकें । महाराजने तब हुकम दीनो, कुंवर लाव बुलायकें ॥ इस भांतिसो जसबल जु चाल्यो, बैठो जहां सुकुमार है । ऐसो तहां दरबार लागो, मनो दुतिय भूपाल है ॥ कर जोरि किंकर तबहिं बोलो, कुंवर अरज़

सुनीजिये । महाराजने तोहि याद कीनो, चलौ ढील न कीजिये ॥ इतनी सुनत सुखानंद बोलो, कार्ज कौन बताइयो । तव विप्रके तिहि हारको, विरतांत सब समझाइयो ॥

चौपई–तबै कुंवरने ऐसे कही । घडी चार बिलमों इत सही ॥ फेर चलौं नृपके दरबार । न्याय करौं ताकौ तब सार ॥ इतनी कहत उठौ तिहि बार । गयो महल भीतरहि कुमार ॥ दासी एक लई बुलवाय । तासों ऐसी कहि समझाय ॥ तुम धनपाल तियापै जाय । तासौं ऐसी कहो बुझाय ॥ पठई मोहि सेठ धनपाल । विप्रको हार मंगायो हाल ॥ सुन आज्ञा दासी तहं गई । सेठ तियासों कहती भई ॥ मोहि सेठने पठई हाल । द्विजको हार देहु ततकाल ॥ तुम इत राखो द्विजको हार । उतै परी सेठहिं बहु मार ॥ सोइ मंगायो दीजे मोय । छिन इक ढील करो मत कोय ॥ इतनी सुनकर नारी कही । मैं बरजी सो मानी नहीं ॥ हार धरौ

है निहचैं सोय । सेठ विना नहीं मिलि है कोय ॥
सेठ आप ले जावें हार । हमैं कछू नाहि है अ-
धिकार ॥ तातैं सेठहि ल्याव पुकार । मिलि है
तवै विप्रको हार ॥

सोरठा—इतनी शोध लगाय, सखी कुंवरपै
तब गई । कह्यो भेद समझाय, ताकौ सुनो
बखान अब ॥

चौपई—तब सुखपाल भयो असवार । चलत
भयो नृपके दरवार ॥ पहुंचो यों दरवारमंझार ।
मांनहु आयो देवकुमार ॥ सवरी सभा उठी भ-
हराय । नृप सन्मान कियो अधिकाय ॥ पुण्य-
वंत नर जहं जहं जांय । तहं तहं आदर होत
बनाय ॥ पुन्यहितैं सुख सम्पति होय । पुन्यसों
विद्या पावै सोय ॥ पुन्यहितैं चतुरंग अपार ।
पुन्य बडौ इस जगतमंझार ॥ पूरवपुन्य कियो
जो कुमार । ताको फल भुगतै सुखकार ॥
तातैं पुन्य करो सव कोय । पुन्यहि सार जग-
तमैं होय । बोलौ नृप अति करि अनुराग ।

अहो कुंवर तुम हो बडभागी। तुम आगमन सबनि सुख भयो। मेरो हू अपयश अब गयो।

दोहा—मोसों कोई ना कहै, न्याय अंध है राय।
ऐसो न्याय करीजिये, जातें अपयश जाय।

चौपई—तब ऐसें बोलो सो कुमार। देखों कैसो वाको हार। इतनी सुनकर प्रोहित जबै। झूठो हार दिखायो तबै। लेकर हार कुंवरने कही। हो महाराज सुनो तुम सही। चार घडी पीछे ले हार। फिर ऐहों तुम्हरे दरबार। तोलों सभा रहै अब सोय। एक उठन पावै नहिं कोय॥ फिर सुखपाल भयो असवार। सो पहुंचो निज महलमंझार। तब वह दासी लई बुलाय। तासों ऐसे कही समुझाय। अब फिर सेठ तियापर जाय। देय निशानी ले बदलाय। इतनी सुनकर दासी गई। सेठ त्रियासों कहती भई॥ सेठ घिरे दरबार मंझार। घर नहिं आवन पावें नार। मुझसे तो ऐसी कह दई। जो मुझ जीवन चाहो सही॥ लेहु निशानी झूठो हार। छि-

जको सांचो देहु निकार । नातर शूलीपर धरवाय । सब घर लछमी लेहि लुटाय । त्रिया जात अति कोमल होय । थर हर कांपी मनमें सोय ॥ लयो निशानी झूंठो हार । द्विजको सांचो दियो निकार । मणिकी दीप्ति दिपै वह सोय, जगमग जगमग जोत सो होय । लेकर हार सखी घर गई, जाय कुंवरको सौंपत भई । फिर सुखपाल भयो असवार, पहुंचो भूपतिके दरबार । हार दियो भूपतिको तबै, न्यारो भेद सुनायो सबै । इतनी सुन करकैं भूपाल, लयो बुलाय सेठ धनपाल । तब वासों नृप ऐसी कही, हमरी बात सुनो तुम सही । जाने ठगई कीनी होय, ताकों दंड दीजिये कोय । तव बोलो ऐसें धनपाल । भो महाराज सुनो भूपाल । ऐसी ठगई करे जो कोय, दीरघ दंड दीजिये सोय । गर्दभपर दीजे चढवाय, मुख कारो दीजे करवाय । गृहकी लछमी लेहु लुटाय, और देशतें देहु कढाय ।

छंद—जाकों घरकी खबर कछु नाहीं। मुखही मुख बाद कराहीं। वैसादर ज्यों घृत डारो, तैसें भूपति चित जारो। तुरतहिं गर्दभ बुलवायो, तापै असवार करायौ। अरु मुख कालो कर दीनो, जाकों दीरघ दंड जो दीनों। फिर नगर मांझ फिरवायो, वाके सन्मुख ढोल बजायो। ऐसो काम करै जो कोई, ताकी ऐसी गति होई। फिर देशतें दियो निकराई, धन लछमी सबै लुटाई। तब बोली वाकी नारी, सन ले पिया बात हमारी। तुमने परधन जो चुरायो, ताको ऐसो फल पायो। मैं बरजी सो मानी नाईं, अब भुगतो मेरे साईं। यातें नरनारी सुनीजे, परधनपै चित्त न दीजे॥ निजभाग लिखो सो होई, जाको मेटनहार न कोई। जो न्यायरहित धन लाहीं, नहीं रैहै भवनके माहीं। तातैं उत्तम नर नारी, पर धन छोडो अधकारी। दोहा—

सेठ दियो कढवायके, लच्छि लई लुटवाय।
फेर विप्रको नृपतिने, लीनों निकट बुलाय॥

चौपई—ताके करमें देकर हार । बोले भूपति वचन सम्हार ॥ तुम्हरो न्याय भयो कै नांय । सो हमसों कहिये समझाय ॥ तवै विप्रने ऐसी कही । धन्य भूप तुम जगमें सही ॥ ऐसे न्यायप्रवीन कुमार । बसें तुम्हारे नगरमंझार ॥ न्याय भयौ मेरो अब सोय । तुम सम भूपति और न कोय ॥ तबहीं सभा विसर्जन भई । निज निज गृह सब पहुंचे सही ॥ विप्रहु डेरा पहुंचौ जाय । आगें और सुनो मन लाय ॥ फेर विप्र मन ऐसी कही । जाने न्याय करो अब सही । सोई हारकी कीमत करै । सोई वा सुंदरिको वरै ॥ फिर करमें लेकर वह हार । पहुंचौ महीपालके द्वार ॥ जाय सेठसों ऐसी कही । एक हार मोपर है सही ॥ जाकी कीमत करै जो कोय । ऐसो मोह न दीसे लोय ॥ तब बोले ऐसे महिपाल । याको मोल कहो ततकाल ॥ द्वादश कोड कही दीनार । सेठ प्रमान करी तिहिं बार ॥ भंडारी लीनो बुलवाय । तिनसों कहत भयो

समझाय ॥ द्विज चाहे जो दीजे सोय । छिन इक ढील न तामें होय ॥ इतनी सुनकर द्विजने कही । सेठ वचन तुम सुनियो सही ॥ बिकवेको नहिं लायो हार । कीमतहीको है महिपाल ॥ याको भेद सुनो अब सोय । सब विरतांत सुनाऊं तोय ॥ मालवदेश उजैनी थान । महीदत्त तहं सेठ बखान ॥ एक सुता ताके अवतरी । मनोरमा जानो गुनभरी । सो तुव सुतकों दीनी सोय । ताके टीका हार ये होय ॥ इतनी सुन करके महिपाल । मन आनंद बढो अति हाल ॥ नगर बुलौवा दीनो तबै । जुरे नगर नरनारी सबै ॥ गावें जुवतीं मंगलाचार । अन्य बधावे होत अपार ॥ जाचक जनको दान जु दियो । सज्जनको सनमान सु कियो । जिनमंदिरकी पूज रचाय ॥ बहु विधिसों वसु द्रव्य चढाय । फिर पंडितको लियो बुलाय । घडी मुहूरत लीन सुधाय ॥ टीका सुतहि चढायो सार । आगें और सुनो विस्तार ॥ विप्र विदा कीनो पुनि

जवै । दियो अतुल धन ताकौं तवै । अतिशय दान विप्रको दियो । जनमदरिद्र विदा तसु कियो ॥ बहुत बात को कहै बढाय । बढै कथा नहिं अंत लहाय ॥ कूच कियो तहंतैं द्विज सोय । दिन अरु रात गिनैं नहिं कोय ॥ चलत चलत जब कछु दिन गये । नगर उजैनी पहुंचत भये ॥ सब विरतांत कहौ समझाय । सुनकर सेठ महा सुख पाय ॥

दोहा—इहिविधिसों सुंदरितनी, भई सगाई सार । और कथा आगे सुनो, चित देकर नर नार ॥ घडी मुहूरत शुभ लगन, लीनो सब दिखलाय । और सुनो मन लायकें, जैसो कथन जु आय ॥

चौपई—सुंदरिने जानी जब सोय, अब तो व्याह हमारो होय । एक दिवस श्रीमुनिपै गई । तीन प्रदच्छिना देती भई ॥ नमस्कार कर नायो भाल । अरज सुनो करुनाप्रतिपाल ॥ कोई व्रत इक दीजे मोहि । सफल जनम जासौं अब

होहि ॥ तबै मुनीश्वर ऐसे कही। धन्य जनम तेरो अब सही ॥ तैं जिनव्रत अब जांचो सोय। तो सम नारी और न कोय ॥ दशलच्छन व्रत मुनिवर दिये। सो सुंदरिने सिर धर लिये ॥ सब विधि ताकी दई बताय। तब बोले ऐसे मुनिराय ॥ जो तू जिनव्रत लीनो सार । शीलप्रतिज्ञा कर सुखकार ॥ व्रततप आदि करै जो कोय। शील विना सब निष्फल होय ॥

दोहा–घने विंदु जो दीजिये, एक अंक नहिं होय।
तैसैं निरफल जानिये, शीलविना सब कोय ॥

चौपई—शील कहौ सो दोय प्रकार। एक गृहस्थ एक ब्रह्मचार ॥ जाके निजपरत्रियाको त्याग। सो है ब्रह्मचर्य बडभाग ॥ जाके निज-त्रियमें संतोष। परातियको माने अति दोष ॥ सो है गृहस्थाचार महान । आगे और सुनो जो बखान ॥

दोहा–

वनचारी मुनि अरजिका, ब्रह्मचारि हैं सोय।
श्रावक और शिराविका, गृहस्थाचारी होय ॥

चौपई—तब सुंदरने ऐसी कही । शीलप्रतिज्ञा मैं अब लई ॥ होसी मेरो जो भरतार । ताहीसौं संतोष अपार । ता सिवाय दूजो नर कोय । तात भ्रातसम गिनिहौं सोय ॥ इहिविधि शीलप्रतिज्ञा लई । श्रीमुनिवरकी साख जु दई ॥ लेय प्रतिज्ञा निजघर जाय । सुनके तात महा सुख पाय ॥ यह तो कथा यहां ही रही । आगे और सुनो जो भई ॥

दोहा—लई प्रतिज्ञा सुंदरी, भई सगाई सार ।
अब जो कथन विवाहको, सो सुनियो नर नार ॥

चौपई—टीकाको दिन पहुंच्यो आय । तहंसे चले बरात सजाय ॥ हय गजरथ बाहन असवार । चतुरंगीदल सजौ अपार ॥ अरबी सुतरी अरु करताल । तूर मृदंग भेरि सहनाल ॥ सब शोभाको वरनन कहौं । बाढै कथा अंत ना लहौं ॥ इहिविधि सेठ सजौ सुखकार । ब्याहनको सुखानंद कुमार ॥ चलत चलत जब बहु दिन गये । नगरि उजैनी पहुंचत भये ॥ डेरा

दीने बागन जाय। तहां निशान रहे फहराय॥ नेग-चार तहँ बहुविधि भये। अरु खटरसके भोजन दये॥ एक पहर निशि बीतत भई। तबही शुभ बारौठी ठई॥ फिर सज सेठ भयौ तैयार। ताकौ कौन कहै विस्तार॥

छन्द-कोई गज ऊपर असवारी। कोई रथन चढे सुखकारी॥ कोई सुखपाल चढे जू। कोई पालिकी बैठ कढे जू॥ कोई सु तुरंग नचावें। बहु भांति तमाशे लावें॥ जहँ तख्त बंधे अधिकाई। असमान रहे तहं छाई॥ अरबी सुतरी तहं राजें। करतालनकी ध्वनि गाजें॥ सु निशान रहे फहराई। छूटें हथफूल हवाई॥ इहिविधि दरवाजे आये। वर देख महा सुख पाये॥ शोभो दीनो अतिभारी। तेहि वरनत मो मति हारी॥ कंचनके कलशा दीने। खासे गुलथान नवीने॥ अरु चीर दक्खिनी सारा। दीने गजमोतिन हारा॥ कुंडल रु कडे बहु जानो। अति दीनो माल खजानो॥ इत्यादिक

शोभो दीनो। कवि वरनन स्वल्प सो कीनो॥ बहु बात कहै को बढाई। दिन तीन रखे बिलमाई॥ चौथो दिन लागौ जबहीं। बारात बिदा भई तबहीं॥ पुत्रीको सेठ सिखावैं। ताको ऐसे बतरावैं॥ कुलरीत चलौ तुम सोई। जातें मोरि हँसी नहिं होई॥ तुमसे जेठी जो होई। उत्तर मति दीजो कोई॥ अरु सास हुकुम सिर धरियो। यह सीख हमारी करियो॥ इस विधिसों सीख दई जू। सुन्दर चित धार लईजू॥ फिर कूच भयो सुखकारी। दिन रात सुनो नर नारी॥ सो कछु इक दिनके माहीं। पहुंचे विजयन्ती जाई॥ पहिले जिन मंदिर माहीं। वर कन्या धोक दिवाई॥ वसु विधि पूजे जिनचंदा। जासों कटैं कर्म अरिफंदा॥ जाचकजन दान सो दीनो। सज्जन सम्मान सो कीनो॥

दोहा—इस विधिसौं वर ब्याहके, निजघर आये सोय। और कथन आगे सुनो, जो कुछ

जैसो होय ॥ सुखानन्द अरु मनोरमा, पूरव पुन्य सहाय । भोग भोगवे तहं घने, सो सुख कह्यो न जाय ॥

चौपई—एक समय सुखानन्द कुमार । सोवत थे निज सेजमझार ॥ आधी रैन वीत जब गई । ताके चितमें चिंता भई ॥ भाग्य पिताके जानो सार । भोग विलास करौं जु अपार ॥ मैं उद्यम कीन्हों नहिं कोय । कैसे सुयश हमारो होय ॥ उद्यम है दूजो करतार । उद्यम दुःखविनाशनहार ॥ उद्यम विन नर रंकसमान । उद्यम है जगमें परधान ॥ सो उद्यम अब कीजे कोय । जातें सुयश हमारो होय ॥ तबलौं जागी ताकी नार । कहन लगी सुनियो भरतार ॥ आधी रैन वीत अब गई । कहा तुम्हरे मन चिंता भई ॥ सोवें सकल नगर नर नार । पशु पंछी सोवें तरु डार ॥ ऐसी चिन्ता व्यापी कौन । वदन मलीन भयो वश तौन ॥ तब बोलो सुखानन्दकुमार । प्रानवल्लभा सुन

वर नार ॥ भाग पिताके बहु सुख करौं। पै नहिं उद्यम चितमें धरौं ॥ पुत्र पिताके आगे सोय। उद्यम नाहिं कर जाने कोय ॥ तौ कुल-हीन कहावै तबै। यह चिंता मन उपजी अबै॥ तब बोली ऐसे वर नार। मेरे वचन सुनो भर-तार॥ यह तो तुमने सांची कही। यामें फेर कछू है नहीं॥ उद्यम कीजे देशमझार। भोग विलास करौ नित सार॥ तब कुंवर फिर ऐसी कही। हो वर नार सुनो अब सही॥ घर उद्यम कर है जो कोय। ताको सुजस कबहुं नहिं होय॥ तातें जाय विदेशमझार। उद्यम करौं सुनो वर नार॥ प्रश्नोत्तरमें बीती रैन। तौलौं प्रात भयो सुखदैन। मनमें जप करकें नवकार। शय्या त्यागी सेठकुमार। पितापास तब पहुं-चौ जाय। तासु चरनप्रति सीस नवाय ॥ तब अहिपाल कही कर प्यार। भो प्रियसुत सुखा-नन्दकुमार॥ कैसी चिन्ता व्यापी तोह। वद-न मलीन दिखै सुत मोह॥ तब कुमारने ऐसी

कही। तात वचन तुम सुनियो सही ॥ तुम्हरे भाग्य भोग बहु करे। मैं उद्यमगुन चित नहिं धरे ॥ कैसे सुजस हमारो होय । यह चिंता व्यापी है मोय ॥ सुनत सेठने ऐसी कही। कुँवर बात सुन लीजो सही ॥ जौलौं जीवन तुम्हरो होय। लच्छि घनी घर मोरे सोय ॥ नितप्रति करियो भोगविलास । मनमें कछु मत होहु उदास ॥ तबै कुँवर फिर ऐसी कही। तात वचन तुम सुनियो सही ॥ लछमी तो अति चंचल होय। याको पतियारो नहिं कोय ॥ छिनमें राजा छिनमें रंक। छिनमें निरमल छिनक कलंक ॥ जो नर लछमीवान हु होय। उद्यम कर जाने नहिं कोय ॥ जब ही लछमी जाय विलाय। घर घर मांगत भीख बनाय ॥ मात पिताको डूबे नाम। जातैं सरै न एकहु काम ॥

दोहा।

जो नर लछमीवान है, कर जाने रुजगार।
लछमी जाय पलाय तौ, उदर भरै सुखकार ॥

चौपई—यातैं सुनो तात तुम सोय । कोट उपाय करो तुम जोय ॥ मैं घरमें रहवेको नाहिं । उद्यम करौं विदेशके माहिं ॥ तबै सेठ यह जानी सही । घरमें यह रहनेको नहीं ॥ तबै सेठ इमि वचन उचार । सुन लीजे सुखानन्द-कुमार ॥ जो परदेश जाहु तुम सही । हमरी सीख धरौ चित यही ॥ प्रोहन इत लीजे भर-वाय । जो कुछ हंसदीपकों जाय ॥ इतकी बेंचों दीपमंझार । उतकी आन खरीद कुमार ॥ इतनी सुनकें तबै कुमार । मनमें ऐसो कियो विचार ॥ तात हुकुम नहिं मानो जोय । तो मन दुखित पिताको होय ॥ तबहीं कुंवर तया-री करी, चलवेकी सुधवाई घरी ॥ प्रोहन ब-हुत लये भरवाय, जो कछु हंसदीपको जाय ॥ सुंदरिसे तब ऐसी कही । हो वर नारि सुनो तुम सही ॥ हम तो अब परदेशहिं जाहिं । तुम सुखसे रहियो घरमाहिं ॥ सुनकर सुन्दरि करत विचार, जो मैं अब बरजौं भरतार ॥ तो

पिय हेतु अमंगल होय, यह तो वात उचित नहिं कोय ॥ तव सुन्दरिने ऐसी कही, हो भरतार सुनो तुम सही ॥ जो परदेश जाहु तुम सोय, दासीको मत विसरो कोय ॥ एक सीख मेरी चित धरौ, सो स्वामी तुम नितप्रति करौ । त्रिया जाति अति चंचल होय, तनिक प्रतीति करो मत कोय ॥ तुमतें जेठी जो तिय होय, मातासम तुम गिनियो सोय ॥ तुमहिं वरावर नारि जो कोय, भगिनी सम तुम गिनियो सोय ॥ अरु तुमतें छोटी त्रिय होय, पुत्रीसम तुम गिनियो सोय ॥ इसविधि सीख नारि जव दई, कुंवर चित्तमें सव धर लई । धन्य त्रिया ऐसी जगमांह, जो पतिको शुभ सीख दिवांह । तहंतें फिर चलके सो कुमार, पहुंचौ श्रीजिनगेहमंझार । वसुविधिसों पूजे जिनचन्द, जासों कटें कर्मके फंद । घडी मुहूरत दिन सुधवाय । प्रोहन लिये घने भरवाय । शूर पांचसौ संगमें भये । निज निज आयुध करगें लये । वहुत वात को

कहै वढाय, क्रम क्रम वढत कथा वढ जाय ।
चलत चलत सो कछु दिन गये, हंसद्वीपमें प-
हुंचत भये । डेरा दिये नगरमें जाय, तहां व-
निज कीनो अधिकाय । यह तौ कथन यहां
ही रह्यो, आगे विजयन्तीमें गयो । सो सुनियो
सवहि नर नार । अपनो चित्त लगाय सो सार ।

गीतिकाछंद—एक दिन मनोरमा सुन्दरि,
कर सोलह शृंगार जू । पहिरे सो दासिनी चीर
जाने, गले मोतिनहार जू ॥ मोतिनके गजरे
दिये करमें अंग कुसुमी चीर है । इहि भांतिसों
सुंदर सो साजी सुगुन कर गंभीर है ॥ सज धजके
सुन्दर चढी ऊपर, महल सतखने सोच जू ॥
निशिदिन पियाकी वाट हेरै शीलभूषित होय
जू । तसु करम पूरव उदय आयो, सो सुनो नर
नार जू । तिहि मार्ग निकसो भूपसुत इक, हृदय
अधिक विकार जू ॥ ताकी नजर वह पडी नारी
कामशर लागो सही । सो और वातें सवहि वि-
सरी, नारि मनमें वस रही ॥ ऐसी जो मनमें

वह विचारी, धन्य यह अवतार है । अरु धन्य ही है पुन्य वाको, जाके घर यह नारि है ॥

चौपई—जो यह नारी मिले न मोय । तो धिक जीवन मेरो होय ॥ फिर लौटौ तहंतें जो कुमार । पहुंचो सो निज भवनमंझार ॥ मनमें करै विचार सो जोय । किहिविधि नारि मिलै यह मोय । जो मैं वासों जबरई करौं, भूपति न्यायी तासों डरौं । मोकों दंड दिवावै हाल । किहि विधि हमें मिलै वह बाल । जो वह नारि मिलै नहिं मोय । तो अब मरन हमारो होय । दूती एक लई बुलवाय । तासों ऐसी कही समझाय ॥ तुम महिपाल हवेली जाव, जैसे बने नारि वह लाव ॥ बहुत इनाम देहुंगो जोर । जनमदारिद्र नसैहौं तोर ॥ इतनी सुनके दूती गई, सेठ हवेली पहुंचत भई ॥ सुन्दरिके ढिग पहुंची जाय, वह वासों ऐसें बतराय ॥ कहं तुम सुन्दर नारी सार, आई वनिकगेह दुखकार ॥ राजकुंवर घर चालो अबै, सबपै हुकम

करौ तुम तबै ॥ वे तुमकों कर हैं पटनार । जो चाहो सो देहिं कुमार ॥ इतनी सुनी सुन्दरी जबै, क्रोधज्वाल प्रज्वलित भइ तबै ॥ चाबुक करमें गहिकें सार । मार लगाई ताहि अपार । दूती भागी तब विललाय । भूप कुंवरपै पहुंची जाय । मेरे वशकी नहीं कुमार, मोकों अधिक लगाई मार । इतनी सुनी कुंवरने जबै, विलखत वदन भयौ अति तबै । डर माने भूपति को सोय, जबरई कर न सकै वह कोय।

अडिल्ल छंद—एक दिवस दूती, मनमें ऐसी कही। ऐसी बात अजुक्त आजलौं ना भई। जो दूतीकों मारै कोई नारि जू। वह तो गर्व गहीली, अधिक गवांरि जू। ताकौ करौं उपाय, कछु अब जायकें। जातें वाकौ गर्व, देहुं घटवायकें। यह विचार कर दूती, फिर चलती भई, क्रम क्रम चलकें सेठ हवेलीमें गई।

चौपई—ताकी साससों ऐसी कही। मेरी बात सुनो तुम सही। वह तुम्हारे घरमें जोय,

कुलनाशक जानो वह सोय। तुमको खबर कछू अब नहीं, हम देखी निज नैनन सही। नित-प्रति राजकुंवर घर जाय, तहां करै व्याभिचार बनाय। जो तुम्हरो कुल उत्तम सार। ताहि कलंक लगावै नार। याके पापथकी अब सोय। तुम्हरो वंश कलंकित होय॥ इतनी सुनकर ताकी सास। मनमें बहुत भई जु उदास। फिर सेठानी पतिपै जाय। ताकौ हाल कहो समझाय॥ तबै सेठने ऐसी कही। वाकों घरसे काढो सही॥ तब ही सास बहूपै गई। झूठ मूठको कहती भई॥ तुम्हरे मैहर व्याह जो होय। बुलवाई जाओ अब सोय॥ इतनी सुनकर सुन्दरि कही। सुनिये विनय सासजी सही॥ विन आदर जैहों नहिं कोय, आय चलौ आ-जैहों सोय॥ फेर सास तब ऐसी कही। हमकों कह पठवाई सही॥ तात वचन तब याद कराय, मोकों पिता कही समझाय॥ सास हुकुम मति डारो कोय। तुम जो कही करौंगी सोय॥

तबहिं सारथी लियो बुलाय। तासों पृथक कही समझाय ॥ याकों तुम रथमें बैठार। छोडो विकट अरन्यमंझार ॥ ऐसे वनमें छोडो जाय। फेर नाम ना सुनिये ताय ॥ इतनी सुनी सारथी जबै। रथमें बैठारी सो तबै ॥ चलत चलत जब कछु दिन गये। निकट नगरके पहुंचत भये ॥ तब सारथि बोलौ कर जोर। सुन्दरि हमें नहिं कछु खोर ॥ पूरव करम उदय तुम आय। सो भुगते विन कैसे जाय ॥ पूरव कर्म अशुभ मैं करौ। तातें परकिंकर अवतरौ। मेरो जोर चलै नहिं कोय, तुमको काढन आयौ सोय। कहं तुमसी पतिविरता नार। सो अब घरसे दई निकार। इतनी सुनकर सुंदरि जबै, थरहर कांपी मनमें तबै। वदन गयो ताको कुम्हलाय। आंसू रहे नैन जुग छाय। तब सारथिसों ऐसी कही। भ्राता विनय सुनो तुम सही। पुत्रीको शरनो घर दोय। कै पतिगृह कै पितुगृह होय। पतिगृहसों जब दई कढाय।

गेह पिताके दे पहुंचाय ॥ इहि अवसर यश लीजे भ्रात। सुंदरि वचन कहै बिलखात ॥ इतनी सुनकर सारथि जबै। दया धरी मनमाहीं तबै ॥ उज्जैनीको चालो सोय। दिन अरु रैन गिनै नहिं कोय। चलत चलत जब कछु दिन गये। पास नगरके पहुंचत भये। महीदत्तको खबर दिवाय। तुम्हरी पुत्री आई भाय। इतनी सुनत सेठ यह कही। कारन कौन भयो यौ सही। विना बुलाइ आई सोय। यह तो अचरज लागत मोय ॥ किंकरसों तब ऐसी कही। केतक और संग है सही। कितने प्यादे किते सवार। कितने हैं संग खिदमतगार। तव किंकर बोलो कर जोर। सेठ वचन तुम सुनो बहोर ॥ दोहा—

आप अकेली सुन्दरी, दूजो सारथि जोय।
रुदन करै दुखकी भरी, और न तीजो कोय ॥
इतनी सुनकर सेठ तब, मनमें करत विचार।
कछु कलंक ताकों लगौ, घरतें दई निकार ॥

गीताछंद—ऐसो हुकम तब सेठ दीनो,

कहौ तिंहि समझायकें। वंश मेरो मलिन कीनो मुख न दिखावै आयके ॥ इतनी जो सुनके सारथी, रथ फेरियो तहतें सही । जब कर्म पूरव उदय आवे, शरन तब कोऊ नही ॥ चौपई— पहुंचो भिकट अरण्यमंझार । सारथि रुदन करै अधिकार । सुंदरिसों तब ऐसी कही । मेरे वश- की अब नहिं रही ॥ कियो कर्म सो निश्चय होय । ताहि न मेटनवारो कोय ॥ तब ही रथ- सों दई उतार । चलत भयो तहंसों मन मार ॥ फिर फिर जावै फिर फिर आय । मोह थकी छोड़ो नहिं जाय ॥ फिर ताने मन कियो क- ठोर । रोवत गमन कियो गृह ओर ॥ सारथि तो निज घरको गयो । आगे और सुनो जो भयो ॥

दोहा—

अबलौं तो सारथि हतौ, संग सहाई सोय ।
हाय अकेली अब रही, धीर धरै नहिं कोय ॥

चौपई—अति हू विकट अरण्यमंझार । बैठी कोमल अंग सुनार ॥ तहां तो वृक्ष सघन अति

होय। हाथोंहाथ न दीखै कोय॥ कहीं सिंहगन करत डकार। कहूं नाग फुंकरत अपार। रोज रीछ दल फिरते घने। ताको भय जो कहत न बने॥ गुफा कहीं पातालमंझार। कहूं गिर ऊंचे अति अधिकार। ऐसे बनमें बैठी सोय। छिन-इक धीर धरै नहिं कोय॥ दोहा—

सेज सुखासन सोवती, दासी चंपति पाय।
धूप तनक जो देखती, वदन जाय कुम्हलाय॥
सो तौ विकट अरण्यमें, बैठी कोमल नारि।
थरहर कंपै बदन सब, रुदन करै अधिकारि॥

चालछन्द—अब ताही अरण्यकेमाहीं। ऐसे जो विलाप कराहीं॥ हा! तात कहां तुम कीनो। मेरो न्याय निवेर न लीनो॥ हा मात उदर तें धारी। मोकों नवमासमंझारी॥ छिनमें तुम छोडि दईजू। करुणा नाहिं नेक भई जू। हा भ्रात कहा तोहि सूझीं। मेरी बात कछू नाहिं बूझी॥ सैंया परदेश गये जू। हमको यह दुःख भये जू॥ बलमा मैं तुम्हारी दासी। तुम पाछे

लगी मोहि फांसी ।। तुम बिन सहे दुःख घनेरे । सुन लीजै साहब मेरे ।। मैं पीहरहूंतें काढी । अरु मैहरतें हू छांडी ।। अब पडी अरण्यके माहीं । मोकों शरनौ कहुं नाहीं ।। तातें सैयां सुन लीजे । सपनेहू दिखाई दीजे ।। ऐसो रुदन कियो बहु ताने । पशु पंछी सुन कुम्हलाने ।। सिंहादिक पशु जो होई । अति दुष्ट स्वभावी सोई ।। तेभी अति रुदन करावें । आंसू बहु नैन बहावें ।। पशु करुणा करैं जो ऐसी । अहो कर्मनकी गति कैसी ।। यह शील धुरंधर नारी । विधिने दुख दीनों भारी ।। देखो शीलतनो परभावै । जाको कोउ न भय उपजावै ।। फिर मन गाढौ तिन कीनो । उरमें प्रभु शरण सो लीनो । अब जिनवर शरण तुम्हारो । दूजो कोई न हमारो ।। यह कथन यहां ही रहो जू । आगें अब और भयो जू ।। राजगृह नगरमंझारी । इक राजकुंवर मद भारी ।। सो ताही अरण्यके माहीं । नाना वनक्रीडा कराहीं ।। जाकी दृष्टि पडी वह नारी ।

तब काम बढौ अति भारी ॥ रथमें बैठार सही ज। निजगृहकी राह लही जू ॥ निजघरमें पहुंचौ जाई। रनवास दई पठवाई ॥ देखो विधिकी गति भाई। दुखमें दुख प्रगटौ आई ॥ खटरस भोजन पहुंचाये। सुंदरिने त्याग कराए ॥ जल अन्न त्याग कर दीनो। उर पंच परमपद लीनो ॥

दोहा—

राजगृही रनवासमें, सुन्दरि बैठी जाय।
रुदन करै अधिकौ अबै, मानो घन बरसाय ॥
एक पहर निशि बीतियो, राजकुंवर मदधार।
चलौ जो ताके पासकों, और सुनो विस्तार ॥
सुन्दरिने जानी जबै, आवत राजकुमार।
शील भंगके करनको, निश्चय जानी नार ॥
थरहर कांपी सुन्दरी, वदन गयो कुम्हलाय।
दीनमृगीकी भांति वह मनमें अति दहलाय ॥
जैसे थोडे जलविषै, तलफत मीन अपार।
तैसे तलफत सुन्दरी, तिहि रनवास मंझार ॥

चाल (अहो जगत गुरुकी)—सुनियो करुणाधाम, अहो प्रभु अरज हमारी। सुनियो

हो भगवान, सब दुखके तुम हारी । तारन तरन जहाज, इन्द्र करैं शत सेवा । सुनियो हो महाराज, तुम देवनके देवा । कोटीभट श्रीपाल, सागरमाहिं परौ जू । ताकों छिनकमंझार, तुम ने पार करौ जू । सेठ सुदर्शन ताहि, शूलीपर धर दीनो । ताको छिनक मंझार, सिंहासन तुम कीनो । और सिया वरनार, पावक कुंड परी जू । ताको सरवर सार, कीनो ताहि घरी जू । अंजन अधम जो चोर, ताने बहु अघ कीनो । ताकों हो महाराज, तुमने सुरपद दीनो । मेरी बेर कृपाल, ढील करो किमि जोई । सुनियो दीनदयाल, तुमबिन और न कोई ॥ राजकुंवर मद धार, आवै पास जो मेरे । शीलभंगके काज, अब प्रभु शरण जो तेरे ॥ शीलभंग जो होय, तो वशकी कछु नाहीं ॥ प्रान तजों तत-काल, या रनवासके माहीं ॥ तातें दयानिधान, यह अरजी सुन लीजे । पत राखौ भगवान, शरन गहेकी कीजे ॥

पद्धरी छंद---जब प्रथम स्वर्गके मध्य जान। सौधर्म इन्द्र बैठो महान । लागी जो सभा ताकी अनूप। सब देव जुरे बैठे सरूप । तब अवधिज्ञान चलतैं विचार। इतकी जानी सब बात सार। देवनसों भाषी तब सुरेश। हम बात सुनो निश्चय अशेष ॥ इक वनिता है भूलोक-माहिं, अति शीलवती जानौ सो ताहि। तापै अब संकट परौ आय, ताकों अब जाय करौ सहाय । इक राजकुंवर मद भरौ जान, सो जाय तहां व्यभिचार ठान। जो शीलभंग वाको सो होय, तो प्रान तजै वह नारि सोय । जो प्रान तजै वह नारि सार, तो शील नशै इस जग-मंझार। व्यभिचारिन होवैं सबै नार, पतिआज्ञा पालैं ना लगार। जिनराजधर्मको नाश होय, अरु फिर न प्रतिज्ञा करै कोय। इक देव लियो तबही बुलाय, तासों हरि हुकम दियो सुनाय। तुम जाहु अबै भूलोकमांह, ताके संकटमें कर सहाय। वह राजकुंवर मद भरौ जान । ताको शासन कीजे महान ॥

दोहा ।

हरिकी आज्ञा पायकें, चलत भयो सिर नाय,
भूमिलोक पहुंचत भयो, दरवाजे ढिंग आय ॥

पद्धरी छंद—कर वृद्धरूप बन रंक सोय । गह लकुटि हाथमें चलौ जोय ॥ दरवाजे ठाडौ भयौ जाय । इत राजकुंवर आयो सो धाय ॥ फिर राजकुंवर तासों कहेह । तू खडौ कौन है रंकदेह ॥ तब देव कही सुन रे कुमार । मैं सुंदरिको किंकर जो सार ॥ तू कौन ? कहांको जात यार । ताको अब भेद सुनाव सार ॥ तब राजकुंवर बोलो हठात । हम तो सुन्दरिके पास जात ॥ अब एक तरफ हो जाहु सोय । तू रंक कहा ठाडो जो होय ॥ तब कही देव सुन रे कुमार । तू वचन कहे ऐसे असार ॥ वर सुंदरिके बिन हुकुम सोय । अब भीतर जान न देहुं तोय ॥ तब इतनी सुनकरके कुमार । अति क्रोध करौ ताने अपार ॥ कछु मर्म भेद जानो न जासु । अति रंक जान झटकौ सो तासु ॥

ज्यों अग्निमाहिं घृत परै जोय। त्यों जरौ देव अति क्रुद्ध होय॥ पकरे ताके तब चरन सार। धरतीपै पछारौ तीन बार॥ फिर हाथ पांय कसकें बनाय। बांधे ताके मुसकें चढाय॥ कर ऊर्ध्व चरन लटकाय दीन। कर नीचेको मुख त्रास दीन॥ फिर चाबुक करमें लियौ सार। सो मार दई ताकों अपार, अति निंद्य वस्तु लेकें जो सोय। ताके मुखमें भर दई जोय॥ बिल-लाय कुंवर नहिं धरै धीर। तब दरवाजे अति भई भीर॥ मारनवारौ दीखै न कोय। मारही मार दिखराय सोय। तब देव कही सुन रे कु-मार। मैं तोकों वचन सुनाउं सार॥ सुन्दारिको शरनौ लेहु जाय। तो प्रान बचें तेरे बनाय। नहिं आसमान लों चढौ धाय। तहहूं ना छोडौं तुझे जाय। जो अधोलोकमें पैठ जाय। तौ प्रान हरौं तेरे बनाय। तब इतनी सुनकरकैं कुमार। सुंदरिपै पहुंचो तुरत सार॥ भो भागि-नी बात्त सुनो जो कोय। अब प्रानदान दीजे

सो मोय । सुन्दर कछु जाने नहीं सोय । क्या अथपर बात भई जो कोय । फिर चतुर नारि जानी जो सोय । जिनराज सहाई कीन मोय । यातैं हे करुणानिधान । मोकों अतिदीन अनाथ जान । जाने सहाय कीनी सो होय । सो प्रकट देहु दर्शन सो मोय । अरु छोड दीजिये अब कुमार । तुम दयाधर्म पालौ जो सार । सुंदरिके वचनथकी सो देव । ताके बन्धन छोडे स्वमेव । फिर देवरूप अपनो सो कीन । सुन्दरिकों प्रगट दिखाई दीन । तब देव कहै ऐसे जो सोय । तोसी न पतिव्रत अहै कोय । तेरी इन्द्रसभाके मध्य सार । सोई करत बडाई तहां नार । तुम मनमें करो चिन्ता न कोय । हम आसपास तुमरे जो सोय । अब थोडे दिनके मध्य सार । तेरो पति तोसों मिलनहार । इतनी धीरज बंधवाय सोय । सुरलोक देव पहुंचो सु जोय । देखो यह शील प्रभाव जान । जाके सुर किंकर भये आन । तातैं नरनारि सुनो जो सोय । अब

शीलप्रतिज्ञा करो जोय । अब राजकुंवर मन जान बात, यह नारी दूजो जीवघात । ताको रथमें लीनी बिठार, ताही वनमें छोडी सो नार। सुन्दरिको हिम्मत बंधी सोय, अब मनमें चिंता नहीं कोय ॥

दोहा।

ताही वनके मध्यमें, आयो छोड कुमार ।
बैठी सुन्दरि तहँ तबै, पढै मंत्र नवकार ॥

चौपई—यह तो कथन रह्यो इहठौर । आगे कथन सुनो अब और । काशीदेश वसै शुभसार । नगर बनारस कहो अधिकार ॥ ता नगरी महिमा को कहै । स्वर्गपुरीसम शोभा लहै । ताही नगर सेठ इक जान । नाम कहो धनदत्त बखान ॥ कारण वानिज गयो जो सोय । आय पडो ताही वन जोय ॥ सुंदरिसों तब ऐसे कही । तू काहे इत बैठी सही । किसकी पुत्री किसकी नार । किसकारण इस अरनमंझार ॥ तब सुंदरि फिर ऐसे कही । सेठ वचन तुम सुनियो

सही ॥ मालव देश उजैनी थान । महीदत्त तहं सेठ सुजान ॥ ताकी पुत्री जानो मोय । आगे भेद सुनाऊं तोय ॥ कौशल देश विजंती लसै। महीपाल तहं सेठ जो वसै ॥ ताको सुत सुखानंद कुमार । सो जानो मेरो भरतार ॥ पूरव करम उदय भयो आय । सब विरतांत कहो समझाय। इतनी सुनी सेठने जबै । लखी भानजी ताने तबै ॥ सुन्दरिसों तब ऐसे कही । मैं मामा तेरो अब सही ॥ नगर बनारस चलो अब सोय । मनमैं चिंता करो न कोय ॥ फिर रथमैं लीनी बैठार । चलत भयो तहंतें तिहि वार ॥ चलत चलत जब कछु दिन गये । नगर बनारस पहुंचत भये। निज त्रियसों तब ऐसी कही । मेरी भानजी है यह सही ॥ दिन दूनो करियो सनमान । होय न याको कछु अपमान ॥ मुझ घर आज पवित्र जु भयो । जब या सुंदरिने पग दयो ॥ षटरस के तब भोजन दिये । सब विधिसों तिस आदर किये ॥

दोहा ।

मामाके घर जायकें, सुखसे रहै कुमारि ॥
और कथन आगे भयो, सुनो सबै नर नारि ॥

चौपई—यह तो कथा यहां ही रही । अब तो हंसद्वीपमें गई ॥ सो तो ताही दीपमंझार । बनिज करै सुखा नंदकुमार ॥ इतकी वस्तु वेच अब सोय । उतकी जाय खरीदी जोय ॥ जबै कुमार भयो तैयार । मनमें ऐसो करै विचार ॥ हंसद्वीपको भूपति जोय । ताकी करौं कचहरी सोय ॥ देखूं कैसो है भूपाल । अब चालिये ताके ढिंग हाल ॥ कछुक भेंट तब करमें गही । राजसभाको चालो सही ॥ जब पहुंचो नृपके दरवार । मानो आयो देवकुमार ॥ सवरी सभा उठी महराय । नृप सनमान करो जो बनाय ॥ पुण्यवंत नर जंह जंह जाय । तंह तंह आदर होत बनाय ॥ बहुबिधि दीने बीरा पान । जैसो भूपतिको सन्मान ॥

दोहा ।

दासी इक रनिवासकी, देख तमासो सोय ।
जाय कही रनिवासमें, रानीसे पुनि जोय ॥

चौपई—इक परदेशी सेठ कुमार । आयो है नृपके दरबार ॥ तासम रूप और नहिं कोय, मानों देवकुमार जो होय ॥ तुम्हरे हैं जो राजकुमार । रंक लगैं ता आगे सार ॥ इतनी सुनकर रानी कही । ताको लाओ महलन सही ॥ इतनी सुनकर दासी गई, सेठकुंवरसों कहती भई ॥ बुलवाये रनिवासमंझार, तुम चालो अब सेठ कुमार ॥ इतनी सुनकर कुमरा जबै, चलत भयो तहंसों पुनि तबै ॥ हाथ लियो गजमोतिन हार, रानी भेंट करनको सार ॥ जब रनिवासमें पहुंचौ जाय, हार भेंट तब करो बनाय ॥ रानी देख अनन्दित भई, सुनो हतो तैसो है सही ॥ तब भंडारी लियो बुलाय, भूषण वसन दिये पहिराय ॥ महिमा तासु कही नहिं जाय, कुंडल दिये करण पहिराय ॥ और गरें गज-

मुतियनमाल, खासा मलमल शालदुशाल ॥ सहजहिं तो सुन्दर है घनो, गहनो पहरें अधिकौ ठनो ॥ रानी देखै नजर पसार, कामबान लागो तिहिं बार ॥ कुमरासों फिर ऐसे कही, हमरी बात सुनो तुम सही ॥ मेरो मन तुमने हर लयो, सो अब तुमरे वशमें भयो ॥ मोसों भोग करो अब सोय, जो चाहो सो देहों तोय ॥ इतनी सुनकर तबै कुमार, थरहर कांपो मनहिं मंझार ॥ लछमी गई प्रान हू गये, अरु बदनाम जगतमें भये ॥ नारिवचन तब याद कराय, मोसों प्रिया कही समझाय । त्रियाजात अतिचंचल होय, तनक भरोसो करो मति कोय ॥ तब रानीसों ऐसी कही, हो महारानी सुनियो सही ॥

दोहा.

जो सुतको माता अबै, पहरावै है सोय ॥
तैसे तुम पहिराइयो, मात समान सो होय ॥

चौपई—इतनी सुनकर रानी जबै, लज्जित भई अपने मन तबै ॥ फिर चुपही मनमें पछ-

ताय । तापर ज्वाब बनो नहिं आय ॥ माता कहकर डेरे गयो। आगे सुनो जो कारण भयो ॥ रानी विडंब बनायो जबै । सो सुनियो नरनारी सबै ॥

दोहा.

कपटरूप मन क्रोधकर, भूषण दिये उतार ॥
क्रोध विवश बोलत भई, वचन भयानक नार ॥

चालछंद—जाने चीर दाक्खिनी फारे, गजमोतिनहार विदारे ॥ अरु देही नखन विदारी, ऐसी जो भई वह नारी ॥ दरबार सु पहुंची जाई । नृपसों फरयाद कराई ॥ महाराज अरज सुन लीजे । इह अरजीपै चित दीजे ॥ वह सेठ कुमार जो आयो ॥ मैंने रनिवास बुलायो ॥ गजमोतिन हारके काजा, बुलवायो हतो महाराजा ॥ वह तो मदको अति भारी । मैं शीलधुरंधर नारी ॥ जब देख स्वरूप जो मोही, कर यों बेहाल जो सोई ॥

दोहा—

विकट वचन मोसों कहे, कहत बनै न नरेश ॥
काम अंधवश फिरत है, नहीं ज्ञान लवलेश ॥

चालछंद—वैसांदर ज्यों घृत डारो । तैसे भूपति परजारो ॥ तुरताहिं किंकर बुलवाये ॥ तिनसों तब हुकम कराये ॥ कुमराको बांधके लावो । डेरनतैं मुसक चढावो ॥ अरु शूलीपर धर दीजे । धनमाल लूट सब लीजे ॥ तब मंत्रीने कर जोरे । महराज सुनो वच मोरे ॥ तुम न्यायवंत महराजा । सुन लीजे गरीबनिवाजा ॥ प्रथमहिं तो बनिक वह जानो । अरु शाहको कुँवर वखानो ॥ सँग है लछमी जाके भारी । आयो परदेशमँझारी ॥ यातें ऐसो काम न होई । निहचैं कर जानो सोई ॥ संग शूर पांचसै भारी । घमसान होय अधिकारी ॥ तुम हाथ लगै नहिं कोई । विरथा जग अपजस होई ॥ तियजात सो चंचल होई । याको विसवास न कोई ॥ तातें भूपति सुनि लीजे । विनन्याय कछू मत कीजे ॥ संतोष वचन कहे सारा । समझायो नृप तिहिं वारा ॥ धन मंत्री वे जगमाहीं । ऐसें नृपको समझाहीं ॥ तब भूप कहै फिर

कैसें । मंत्री जो सुनो तुम ऐसें ॥ उस कुमारको पास बुलावो । सब बात उसे पुछवावो ॥ मंत्री किंकर पठवायो । कुमरा दरबार बुलायो ॥ सो चतुर कुँवर तब जानी । कछु कीन्ह विडंबना रानी ॥ लछमी अरु मान गये जू । विरथा बदनाम भये जू ॥ जाको बदन गयो कुम्हलाई । आंसू नैन रहे जुग छाई ॥ जाके शूर सबै कर जोरे । सुखानन्दसो ऐसे निहोरे ॥ बहु दिवस नमक हम खाई । सो तो दिन पहुंचो आई ॥ स्वामीपै बखत जो आवे । ताको तजिकैं जो जावै ॥ तौ धिक जननी है वाकी । पीछें पग देहै ताकी ॥ यातैं कुंवरा सुन लीजे । मनमें चिंता नहिं कीजे ॥ जौलौं पांचसौ हम संग होई । तुम्हें आंच न आवे कोई ॥ हम पंच शतक मर जाहीं । तब हमरे वशकी है नाहीं ॥ चालिये नृपके दरबारा । सुन लीजे सेठ कुमारा ॥ इतनो जब धीर बंधायो । कुमरा तय्यार करायो ॥ अरु शूर पांचसौ साजे । अरु आयुध लै बहु गाजे ॥

जैसे सोहै गगन माधि चन्दा। तैसैं शूरनमें सुखानंदा॥ इहि भांति चलो दरवारा। आगे और सुनो विसतारा॥ ते धन मंत्री जगमाहीं बुधितें नृपको समझाहीं॥ तिन राखो सो समझाई। अपयश होतो विरथाई॥ भूपतिने आदर कीनो। तिनको तब बैठक दीनो॥ बैठे शूर सभामें कैसे। मानो सिंह हो क्रोधित जैसे॥ तव भूप कहै फिर कैसे। कुमरा सुनो वैन जो ऐसे॥ यो कारन कैसा होई। सब भेद सुनावो मोई। तब बोलो कैसे कुमारा। महाराज सुनो वच सारा॥ रानीनें रनिवास बुलायो। मैंने हार जो भेंट करायो॥ फिर मोहि दयो पहिराई। सो नृपको सबहि दिखाई॥ फिर याने कही अब सोई। कह आवत ना मोह सोई॥ व्यभिचारतनी सब बातें॥ मुझसे भाखी अकुलातें॥ माता कहि तातें वचौ जू। माने ऐसो विडंब रचौ जू॥ आभूषण देखे राई। मनमाहिं विचार कराई॥ यह कुमरदोष कछु नाहीं। यह

दोष त्रियाके माहीं ॥ त्रिया जात जो चंचल होई। इहको विसवास न कोई ॥ आखिर अबला यह नारी। कहा त्रास करों यापै भारी ॥ रनिवासतैं दई निकराई। और देशसों हू भगवाई ॥

दोहा—शील कुशीलतनो सुफल, देख प्रत्यक्ष जु सोय। हरि सहाय वाको करी, रानी निकसी जोय ॥

सोरठा—

यातैं सुनो नरनारि, शीलप्रतिज्ञा कीजिये ॥
शील जगतमें सार, नर भवको यश लीजिये ॥

चौपई—तब भूपति फिर ऐसी कही। कुमरा वचन सुनो तुम सही ॥ सुता वरो हमरी तुम सोय। हम तुमसों अति प्रीति जु होय ॥ तब बोलो ऐसे जो कुमार। हो महाराज सुनो वच सार ॥ हम रानीसे माता कही। लागे वहिन हमारी सही ॥ ये तो बात योग्य कछु नहीं। तुम समझो अपने मन यही ॥ इतनी सुनकर भूपति कही। धन्य धन्य तेरो अब सही ॥ धन्य मातु धन तात सो सार। जिनके घर लीनो

अवतार ॥ तव भूपतिने अति सुख पाय । भूषण वसन नये पहिराय ॥ सादर डेरो दियो पठाय, हेत जनायो अरु अधिकाय। तबै कुंवर फिर ऐसी कही, जल्दी कूच करो अब सही। छिन इक ढील करो मति कोय, फिर जाने क्या कैसी होय ॥ मोहन लिये सबै भरवाय। चलत भये तब ततक्षण धाय ॥ चलत चलत जब कछु दिन गये। तिंहि काननमें पहुंचत भये॥ दोहा—

सुंदरिको जहं सारथी, गयो हुतो छुटकाय ॥
तिहि अरण्यमें कुँवरने, डेरा दीनो आय ॥
चढी रसोई ता समै, सब जीमैं ज्योनार।
भोजन करके तव कुंवर, फिर बैठो दरबार॥
नगर विजंतीके मनुष, कढौ पंथ तिहि आय।
देखि कुंबर चिंतत तबै, किंकर हुकुम कराय॥
कुंवर हुकुमतें किंकरा, दौरे ततछन धाय ॥
पंथीको ले आइयो, कुमरा पास बुलाय ॥

सवैया तेईसा—छेम कहो नगरीके विषै, अरु छेम कहो नृपके घरमाहीं। छेम कहो सुप्रजाकी

तबै, अरु छेम कहो सब देशनमाहीं। छेम कहो हमरे घरकी, हमको दिन बीते घने विरथाहीं। नैन भरे जलसौं पनथी, सुख हां न कहीं न कहीं सुख नाहीं ॥ बात कही पुनि यों पनथी, अब सेठ सुपुत्र सुनो मन लाई। ऐसी भई नगरीके विषे, पुन मोपर सो तो कही नहिं जाई। शीलधुरंधर तेरी त्रिया, घरतें अब सेठ दई निकराई। सारथी ताह लिवाय यहीं, बनमाहिं अकेली गयो छुटकाई ॥ फेर नहीं कछु ताकौ पता, अब कौन ठिकाने गई वह भाई । बात कुमार सुनी इतनी, पुनि लौटके ताने पछार जो खाई ॥ होय अचेत कुमार तबै, सुधि भूल गयो, सब बातकी भाई। शीतल चंदन लाय तबै, तन छींट दई ढिग सूरने जाई ॥ फेर सचेत कियो तबहीं, फिर ऐसे कही उनसों समझाई। सेठ सुपूत चलो घरकों, मनमें कछु चिंत करो मत भाई॥ होनी हुती सो तो होय गई अनहोनी कभूं नहिं होयगी साई। जाइ छिपी

कहुं होय त्रिया, अब लेहिंगे वेगहि शोध ल-
गाई ॥ फेर कुमारने ऐसी कही अब शूर हु बात
सुनो मनलाई। कोमल अंग जो मेरी त्रिया,
छिन देखत धूपके जो कुम्हलाई ॥ ऐसे भया-
नक काननमें, अब सारथी ताको गयो छुट-
काई। जीवनकी तिहि आश कहा, कोई सिंह
कै स्यार भखी इत आई ॥ मोकों नहीं विस-
वास कछू, अब प्राणनको वह दे छुटकाई। कौन
के कारण जाउं घरै, अब कौनकों देहुँ दिखाय
कमाई ॥ संपति लेहु बटोरि सबै, पुनि सो तुम
तातकों सौंपहु जाई ॥ प्यारी प्रियाहित शूर
सुनो, अब भेष फकीरी धरैं हम भाई। जो वह
नारि मिलै हमको, तब तो मिलि हैं तुमको हम
भाई। नातरु वीर सुनो चित दै, अब जन्म ह-
मारो फकीरीमें जाई ॥ इतनी जब शूरन बात
सुनी, तब शोक भये मनमें अधिकाई। दैव ग-
ती अब हाय भई कहा, सुक्खमें दुःख भयो अ-
धिकाई॥ शूरनने जब जान लई अब तो, सुकु-

मार चलै घर नाहीं। संपति लीन बटोरि सबै अरु कीन्ह पयान सबै दुख पाई। मारगमें दिन बीते अनेक, तबै विजयंती गये सुखदाई। जाय कही महिपालसे यों, अब संपति लेहु सबै तुम साई॥ एक बहू तुम काढ दई, अरु पूत तुम्हारो रहो बन जाई॥ त्यों हम किंकर हू न रहैं, अरु देखें नहीं तुम्हरो मुख आई॥ सेठने बात सुनी जबही, तब शोक कियो मनमें अति भाई। सीख त्रियाकी करी हमने, अब तातें भयो दुखहू अधिकाई॥ पुत्रबधू अरु पुत्र गयो, अरु हाय अकीर्ति भई जगमाहीं। मो मुख देखै नहीं अब कोऊ, करै इमि शोक सदा मनमाहीं॥ तातें सुनो नर नारि सबै, अब सीख त्रिया कभुं लीजिये नाहीं॥ ये तो कथा इहि ठौर रही, अरु आगे गई सुखानन्दके पाहीं॥ भेष फकीरी कुमार करो, अरु अंगके माहिं भभूति रमाई। भूषण बस्त्र उतार सबै, अरु शोकमें आपनी देह जलाई॥ होय गयो अति ही गहलो अपनी

परकी सुधि हू विसराई ॥ हाय गई कित हाय गई, बहु भांतिन खोज कियो अधिकाई ॥

चौपई—मोह बुरो संसारमंझार। सो सुनियो सब ही नरनार ॥ ऐसो ज्ञानवंत सो कुमार। भयो फकीर अरण्यमंझार ॥

चालछंद—अब ताही अरण्यके माहीं, कैसे जो भ्रमण कराहीं ॥ वृच्छनसों पूंछै कैसे, कहुं है मृगनैनी ऐसे ॥ सिंहनसे पूंछै कुमार। कहुं देखी हमारी नार ॥ हस्तिनसों ऐसे कही है। कहुं देखी नारि सही है ॥ ऐसैं फिरै है अरण्यके माहीं, तन मनकी खबर कछु नाहीं ॥ भ्रमतो भ्रमतो तहं आयो, राजग्रह नगरमंझायो ॥ जहं नीर भरैं पनिहारी। बतरावैं परस्पर नारी ॥ इक नारि कहै तब कैसे। सखि बात सुनो तुम ऐसे ॥ महाराजकुमर मद भारी। जो लायो हतो इक नारी ॥ वह शीलधुरंधर नारी। गुनवंती रूप अगारी ॥ जाको देव सहाय सो कीनो, नृपसुतको दंड सो दीनो ॥ फिर ताही अरण्य-

के माहीं । कुंवराने दई छुटकाई ॥ तव बोली दूजी नारी । सखि वात सुनो जु हमारी ॥ नगरी जो बनारसमाहीं, वाको मामा जो रहाहीं । ले गयो निश्चै अब सोई । यामें झूंठ कछु नहीं होई ॥ उत सोध इतो जब पायो, कुमरा मनमें हरषायो । नगरी जो बनारस केरो, ताने तबै पंथ जो हेरो ॥ सो कछु दिनमें भटकाहीं, पहुंचत जो बनारसमाहीं ॥ धनदत्तसे ऐसे कही जू, तुम लाये नारि सही जू ॥ सो हमको मिलाय जो दीजे । छिन एक ढील ना कीजै ॥ तब सेठने ऐसे कही है । तुमको हम जाने नहीं है ॥ सुन्दरिने खबर जब पाई । अब आयो हमारो साई ॥ सो मनमें हंसी फिर ऐसे, सरवस्व मिलौ मनो जैसें ॥ सो बैठी झरोखे जाई । तब देखे नजर लगाई ॥ सखियनसे बोले कैसें, सखि बात सुनो तुम ऐसें ॥ निहचैकर कंथ हमारो, जाने भेष फकीरी धारो ॥ यातें सनमान जो कीजे, छिन एक विलंब न कीजै ॥

इतनी सुनी सेठने जबहीं । आनन्द भयो मन तबहीं ॥ जाने लीनो खवास बुलाई, तब ताने स्नान कराई । कुंडल कानन पहिराये । हाथनमें कडे डरवाये । गलमें गजमोतिनमाला, खासा मलमल शालदुशाला । फिर षटरस भोजन दीने, बहुते सनमान जो कीने । दिन बीत निशा जब आई, नारि कंथ मिले सुख पाई । निज निज दुख दोनों कहैं जू, जैसे जिन आय परे जू । बोली शीलधुरंधर नारी, पिय बात सुनो जु हमारी । नगरी विजयंतीके माहीं, मुझे लागो कलंक मेरे साईं । तातैं बालम सुन लीजै, अब मेरो निवेरो कीजै । जबलौं मेरो न्याव न होई, मेरे पास रहो मति कोई । शीलदोष लगो मेरे साईं, ये समझो तुम मनमाहीं । तब बोलो ऐसे कुमारा, मेरी बात सुनो वरनारा । मोकों तो भरोसो है सोई, तुमको कछु दोष न होई । तब बोली ऐसे नारी, पिय बात सुनो जो हमारी ॥ तुमको तो भरोसो साईं, दुनियां मानेगी

नाहीं ॥ तातें बालम सुन लीजे, नहिं महलनमें पग दीजै । जबलौं मेरो न्याव न होई, मुझ संग करो मति कोई ॥ इतनी सुनके जो कुमारा । तहंते दूर भयो तिहि बारा । वे धन्य त्रिया जगमाहीं, जें शीलवती सुखदाहीं । उनको धन जीवन जानौ, जिन शील जगत प्रगटानौ । तिनके सम नारी नाहीं, ऐसे पिय सों वचन कहाहीं ।

दोहा—

इहविध नगर बनारसी, रहतो भयो कुमार ।
और कथन आगें भयो, सुनो सवै नर नार ॥

चौपई—यह तो कथन यहां ही रह्यो । अब तो नगर त्रिजंती गयो ॥ इक दिन पदमसेन जो राय । बैठौ हुतौ सभा जो लगाय ॥ मंत्रीसौं तब ऐसे कही । हमरी बात सुनो तुम सही ॥ सुखानंद जो सेठकुमार । गयो हतो परदेश मंझार ॥ सो अबलौं आयो नहिं कोय । घने दिवस बीते अब सोय ॥ तब मंत्री करजोरकें कही । तुमको भूप खबर कछु नहीं ॥ शीलधुरंधर ताकी

नारि। सेठ दई घरसे जो निकारि ॥ खवर सुनी ता वनके माहिं। रहो वहाँ अव सुधि कछु नाहिं ॥ सो तो भ्रमे सघन वनमाहिं। जीवन मरन खवर कछु नाहिं ॥ इतनी सुनकर भूपति जवै। तुरत सेठ वुलवायो तवै ॥ तव महिपाल ने ऐसे कही। हमरी वात सुनो तुम सही ॥ तुमही राजा घरमें भये। तुम ही न्याय सवै कर लये ॥

दोहा—क्या जानें कैसे करी, कैसो कियो विचार। मो ढिग खवर किछू नहीं, यासें दुःख अपार ॥

चौपई—कैसे कलंक लगायो सोय। हमलों न्याय न आयो कोय ॥ जाको भेद देहु समझाय। नातर शूली देहुं धराय। तवहि सेठने ऐसे कही। हो महाराज सुनो तुम सही ॥ जाको भेद कछू नव सोय। दूती जानत है सव कोय ॥ तव सिंहासन वैठो राय। तुरत लई दूती वुलवाय ॥ तासों भूपति ऐसे कही। दूती वात सुनो तुम सही ॥ जैसी वात भई है सोय। हमसों कहो नहीं डर कोय ॥ ज्योंकी त्यों दीजै वतलाय ।

नातरु शूली देहुं धराय ॥ इतनी सुनकर दूती जबै, मनहिं विचार करै है तबै। भूपतिने सबही सुन लई। काहूने सबही कह दई ॥ जो मैं अब कछु बात छिपाय। तो ये शूली देय धराय ॥ तब भूपतिसों ऐसी कही। हो महराज सुनो तुम सही ॥ तुमरे सुतने करो उपाय। सब वृत्तांत कहो समझाय। इतनी सुनकर भूपति जबै। करै विचार सो मनमें तबै ॥ जबरी करै किसीपै जोय। आवै न्याय नृपतिपै सोय ॥ राजा ऐसे करम कराय। किहि विध धरम चलै सो बनाय ॥ यातें पापी भयो कुमार। निहचै राजविनाशनहार ॥ मेरो पुत्र नहीं अब सोय। यातें दंड दीजिये कोय ॥

चाल जोगीरासा—ऐसे हुकुम तब भूपति कीनो, सुनियो मंत्री सोई। कुवरहिं शूली-पर धर दीजे, ढील करो मति कोई ॥ तब कर जोरके बोलो मंत्री, भूपति तुम सुन लीजे। आखिरको तो पुत्र तुम्हारो, चूक माफ कर

दीजे ॥ तब भूपति फिर ऐसें बोलो, मंत्री सुनो तुम सोई। याको देश निकारौ दीजै, मुख देखे ना कोई ॥ फिर भूपतिने क्रुद्ध होय कर, कुमरहिं दियो कढाई। धन्य भूप ये जगमें जानों, न्यायवंत सुखदाई ॥ न्यायके कारण पुत्र निकारो, ढील करो नहिं कोई। तिनको राज अटल जग होवे, सुजस भूमिपर होई ॥ तब महिपालसे ऐसे बोलो, सेठ सुनो सुखकारी। तुम कुमारको ढूंढ ले आवो, जाउ विदेशमंझारी ॥ नातर देहुं निकारो तुमको, ढील न होवहि भाई। और बात क्या तुम ही जानो, शूली देहुं चढाई ॥ इतनी सुनकर सेठ जो तब हीं, निजघर पहुंचौ जाई। निजात्रियसों तब ऐसे बोलो दुष्टिन सुन मनलाई ॥ तेरी सीख जो मैंने मानी, बहू दई निकराई। बहू गई अरु पुत्र गयो अब, अपजस भयो बनाई ॥ इतनी कहकर घरसे निकसो, भ्रमत भ्रमत दुखपाई। देशदेशमें खोज थको वह सोध लगो नहिं

कोई ॥ नगर बनारस तब हीं पहुँचौ, सोध मिलो तहं सोई । तब धनदत्तके द्वारे पहुंचौ, तासों कही समझाई ॥ पुत्रदान हमको अब दीजै, कहंलग तुम जस गाऊं । तातें मोकों बेग मिलावो, हाथ जोर सिर नाऊं ॥

चौपई—इतनी सुनकर सेठने जबै । किंकर भेजो कुमरपै तबै ॥ आयो तात तुम्हारो सोय । करो मिलाप बहुत सुख होय ॥ इतनी सुन कर कुमरा कही । अहो पिता मुख देखों नहीं ॥ लौट जाय अपने घर सोय । जियत मिलाप न हमरो होय ॥

चाल छंद—कहै शीलधुरंधर नारी । सुनले पिया बात हमारी ॥ ऐसे तातकों वचन उचारो । धिक् जीवन जन्म तुम्हारो ॥ जासैं तुम पैदा भये जू । ताकों ऐसे वचन कहे जू ॥ हमने जो पूर्व कमायो । सो उदय हमारे आयो ॥ यातें सुन बालम लीजे । काहूको दोष न दीजै ॥ यातें समझो मनमाहीं । तुम बैन उचित यह

नाहीं ॥ यातैं मो अरजी सुन लीजै। अब तात मिलाप जो कीजै ॥ फिर नारि हुकुमतें सोई। चालो छिन ढील न कोई ॥ जाय तात चरण सिर नायो। महिपालने कंठ लगायो ॥ दोऊ रुदन करत हैं कैसे। मानों घन बरसत हैं जैसे ॥ तब सेठने ऐसे कही है। कुमरा सुनो वचन सही है ॥ मेरी चूक माफ मुझ कीजे। अब तो घरको पग दीजे ॥ तब ऐसे बोलो कुमारा। मेरे तात सुनो इहि बारा ॥ नगरी विजयंतीके माहीं जीवत पग धरनेको नाहीं ॥ तब ऐसे बोली नारी। पिया बात सुनो ये हमारी ॥ नगरी विजयंतीके माहीं। मुझे लागो कलंक मेरे साईं ॥ तहं तो इक वार चलीजे। पिय मेरो न्याय करीजे ॥ फिर रहियो जहां तुम सोई। एक बार ले चलिये मोई ॥ इतनी सुन करके कुमारा। चलनेको भयो तय्यारा ॥ सुन्दरिसे ऐसे कही है। मेरी मानो बात सही है ॥ अब तातको भोजन दीजै। छिन एक ढील ना कीजे ॥ बोली शी-

लधुरंधर नारी । पिया बात सुनो जो हमारी ॥
जबलौं मेरो न्याव न होई । अपने कर कीजे
रसोई ॥ किसिहीको जिमाऊं नाहीं ॥ पिया
समझो ये मनमाहीं॥ इतनी सुनकरके कुमारा ।
दिये तातको भोजन सारा॥

चालछंद—धनदत्तसों बिदा जब मांगी ।
तब चलत भयो वडभागी ॥ चलत चलत जब
कछु दिन गये । नगर विजंती पहुंचत भये ॥
तब बोली शील धुरंधर नारी । सुन ले पिया
बात हमारी ॥ जबलों मेरो न्याव न होई ।
घरमें पग देऊं न कोई। तबलौं रहौं नगरके मा-
हीं । सुन लीजिये मेरे साईं ॥ कहुं और हवेली
माही । सो रही नगरमें जाई ॥

दोहा ।

इस विधिसौं सुन्दरि तबै, आई नगर मंझार ।
और कथन आगे भयो, सुनो सबै नरनार ॥

चौपई—भूपति पाई खबर जो सार । सु-
न्दरि आई नगरमंझार ॥ जबलौं तासु निखार

न होय। घरमें पग घरनें नाहिं सोय ॥ इतनी सुनकर भूपति कही। अब तो सांझकी विरिया भई ॥ प्रात होत बैठौं दरवार। तबहीं न्याय करौं सुखकार ॥

दोहा—प्रथम स्वर्गके मध्यमें, हरि बैठो दरवार। चरचा चली जो शीलकी, सुनो सबै नरनार ॥ देवनसों भाषी हरी, सुनो बात तुम सोय। सुन्दरि आई नगरमें, प्रात न्याव अब होय ॥ क्या जाने अव तासुकी, कौन कसौटी होय। यातें न्याय कर दीजिये, आंच न आवै कोय ॥ महिमा बढ़ै जो शीलकी, चलै धरम सुखकार। ऐसो जतन करीजिये, जासों जीते नार ॥ इन्द्र हुकुमसे देवता, चालो ततछन धाय ॥ आधी निशि बीती जबै दोय पहर ठहराय ॥

चाल (ते गुरु मेरे उर बसो)—शील बडो संसारमें, शील करो नर नार। शील जगतमें सार है जातें हो भव पार, प्राणी० ॥ धन्य म-

नोरम सुंदरी, धन्य पतिव्रता नार ॥ धन्य मात अरु तात हैं, धन्य जनम अवतार, प्राणी० ॥ देव गगनतैं धाइयो, वा सुंदरिके काज । द्वादश फाटक नगरके, भेड दिये महाराज, प्राणी० ॥ वज्र कील हरिने दई, लागे वज्र किवार, जच्छ देव जिनपर जहां, बैठौ चौकीदार, प्राणी० ॥ प्रात भयो तब हीं तहां जागे सब नर नार, मारगनको पंथी चले, क्यों नाहिं खुलत किवा-र, प्राणी० ॥ भूप खबर जब पाइयो, बैठे सब सरदार । मल्ल शूर पेले घने, जोधा चारहजा-र, प्राणी० ॥ पच पच हारे शूर सब, कर करके हुंकार, अंगुल एक जो ना हटैं, लागे वजर किवार, प्राणी० ॥ आप नृपति तब आइयो, चतुरंग सेना लाय । फाटक द्वारे आइयो, किं-कर दिये पिलवाय, प्राणी० ॥ लाखों योधा धाइयो, झुंझत केती वार । मल्ल अखाडे तहां करें, नाहीं खुलत किवार, प्राणी० ॥ मदमाते हस्ती तहां पेल दिये भूपाल, मस्तक तिनके

फट गये, नाहीं खुलत किवार, प्राणी० ॥ भूप
सोच अधिको करै, कीजै कौन विचार, कौन
पाप प्रगटो अबै, लागे वज्र किवार। प्राणी० ॥
अन्नपान नृप त्यागियो, त्यागो सब नर नार।
परै क्लेश जो नगरमें और सुनो विसतार,
प्राणी० ॥ परदेशी औ मुसाफिरा, ते सब करैं
पुकार। मारग सबके रुक गये, लागे वज्र कि-
वार, प्राणी० ॥ ऐसा दुख जो नगरमें, तहां
मचो अति शोर। नेक धीर कोई ना धरें, करैं
पुकार जो घोर, प्राणी० ॥ दोय पहर निशि
बीतियो. चार पहर ठहराय। दूजे दिनकी
निशि जबै। दोय पहर जब जाय, प्राणी० ॥ आई
निद्रा भूपको, सोवै सब दरबार, देवने सपनेमें
कही, सुन लीजो भूपाल, प्राणी० ॥ कोट उ-
पाय जो तुम करो, नाहीं खुलत किवार। शी-
लवती जो है त्रिया, और पतिव्रता नार, प्राणी०
पगको अंगुठा जो छुवै, छिनमें खुलहिं किवार,
और उपाय करो घने, सुन लीजे भूपाल, प्राणी०

इतनी सुनकर भूपती, जागो तब ततकाल ।
दई नगर डौंडी जबै, साजि तव घर घर नार,
प्राणी० ॥ घर घर साजीं सब त्रियां कर सोला
शृंगार । चीर दक्खनी पहिरके, गजमुतियनके
हार, प्राणी० ॥ मुतियनके गजरे बने, अंग
कुसुंभी चीर । इहि विधिसे तिरिया सजीं, जानो
गुण गंभीर, प्राणी० ॥ वा कहै मैं खोलूं अबै,
वा कहै मैं खोलूं जाय । घर घर गरव सब
चालियो, और सुनो मन लाय, प्राणी० । लाखों
तिरियां उमडके फाटक पहुंची जाय ।सेनसहित
भूपति खडो, सब नारि जुरी तहं आय, प्राणी०
पचपच हारीं सब त्रियां, कर करके हुंकार ।
अंगुल एकहु ना हटे, लागे वज्र किवार, प्राणी०
भूप सोच अधिको करे, कीजै कौन विचार ।
जे तिरियां थीं नगरकी । आय चुकीं सब द्वार ।
प्राणी० ॥ सजो रनिवास जो भूपको, घर घर
गरव अपार । मानभंग सबको भयो नेकु न
खुलंत किवार । प्राणी० ॥ मंत्रीसे ऐसी कही ।

सुन मंत्री तुम सोय। और त्रिया तो ना रही।
सोई बतावो मोय प्राणी० ॥ मंत्री कहै कर जो-
रकैं। सुन महाराजा सार। जेती त्रियां थीं न-
गरकी। आय चुकीं भूपाल प्राणी० ॥ शील
करौ नरनार, शील जगतमें सार है। जातें
हो भवपार। प्राणी शील बडो संसारमें।

पद्धरी छन्द—महिपाल बहू जानो जो सार।
ताहीसों खुल हैं ये किवार ॥ दूजी अब नहिं
रही नार। यह ताही कारण ठाठ सार ॥ नंगे
पायन चालो सो राय ॥ सुन्दरिके ढिंग पहुंचो
सो जाय ॥ कर जोर कहैं महाराज सार। तोसी
पतिवरता नाहिं नार ॥ अरु मेरे जाने बिन जो
सोय। तुव देश निकारौ भयौ जोय ॥ अब
चालौ जहं लागे किवार। अब चक माफ कीजै
सो नार ॥ कह सुंदरि ऐसे वचन सार। महा-
राज अरज सुनियो हमार ॥ बडी बडी पति
व्रता जो नार। तिनसों नाहीं जब खुले किवार
मोकों कलंक लगायो सोइ। मुझ पास किवार

खुलैं न कोइ ॥ तब भूपतिने इमि कही सोय। यह तेरे कारण ठाठ होय। सब चूक माफ क-रिये सो आज। काटो सब नगरकलेश साज। इहि भांति जबै हठ करी राय। कही सुन्दरी तब हम बनाय। तुम चालो अब महाराज लार। मैं आऊं पीछे घडी चार॥ इसभांति दयो भूपति पठाय। असनान आप कीने जो जाय। शुभ चीर दक्खिनी पहिर सार। इहि भांति सजी वह तबै नार॥ भुजबन्धन बाजू पहिर लीन। कर रत्न जडित मुंदरी प्रवीन। दुलरी तिलरी सब गले साज। पहिरी बेसर झलकासमाज॥ फिर सीस माहि है सीसफूल। मांग गुथी मुतियन अतूल। अरु पग-नेवर झनकार सार। इसभांति सजी सो तबै नार॥ फिर अष्ट द्रव्य करमें जु लेय। जिनराजभवन पहुंची सो तेय। वसु विधिसों तब जिन पूज कीन। मन वच तन करके धरम लीन॥ तहं

अरज करै कैसे जो सोय। तुम सुनो सबै नर नार सोय॥

चौपई—करुणासागर अरज हमारी। तारन तरनि सदा सुखकारी। दीनदयाल सुनो तुम सोय। तुम बिन प्रभू और नहिं कोय। मात तात तुम ही जगमाहीं। तुम बिन बांधव जगमें नाहीं। मैं तो जिनवर शरण तिहारी। अब राखो प्रभु लाज हमारी। फाटक लगे नगरके माहीं। पच पच हारीं नारि तहांहीं॥ मोसैं भूपतिने हठ कीनो। मैं प्रभु शरण तुम्हारो लीनो। तुम्हरे भरोसे श्रीजिनराय। फाटकपर पहुँचूं अब जाय॥ जो प्रभु खुलें किवार न कोय। निहचै मरण हमारो होय॥ तातैं करुणानिधि सुन लीजे। अबके पत मेरी रख दीजे॥ इतनी अरज करी जब नारी। चलत भई तहँते सुखकारी॥ फाटकपै पहुँची जब जाय। सेनासहित खडो तहँ राय॥ ठाढे तहां सकल नर नारि। पहुंची शीलधुरंधर नारि॥ नगर

त्रियां सब कहैं हसाय। अबकी पतिव्रता ये आय॥ हमसे किवाड़ खुले नहिं कोय। अब खोलन ये आई सोय॥ इतनी सुन तब सुदंरि नारि। कैसे बोली टेर पुकारि॥ त्रिभुवनपति सुन लीजै सोय। सुनियो पंच सकल सब को-य॥ जो भरतार मेरो सुखकारी। ता सिवाय नहिं और निहारी॥ तात भ्रात सम गिनो जो होय। तौ किवाड खुलें अब सोय॥ जो भरतार मैंने अब जानो। वा सिवाय कोइ दू-जो मानो॥ स्वप्नमात्र जो इच्छो होय। तो किवाड खुलियो मत कोय॥ इतनी अरज करी वह नारी। पायं अंगूठ लगायो भारी॥ क्षणमें वज्र किवाड गिरे जू। खुले किवाड तब शोर भयो जू॥ जय जय शब्द गगनमें होय। बैठे देव विमानन सोय॥ नभतें देव कहैं शुभ-कार। तू है सती पतिव्रता नार॥ यातैं इन्द्र सभाके माहीं। सुन्दरि तेरी करत बडाई॥ तैं कुल ऊपर कलश चढायौ। तेरो सुयश जगतमें

गायौ ॥ एकादश फाटक जब खोले। भूपतिसें कहे वचन अमोले ॥ तुम्हरे नगरकी त्रिय जो कोई। मैहर पीहर गई सो होई ॥ तहंतें आय कहेंगी कोई। वो तो हम खोलत हीं सोई ॥ तिनके कारण एक किवारा। राखो है सुनिये भूपाला ॥ इतनी सुनकर भूपति जबै। जोरे कर विनवै पुनि तबै ॥ हरिने तेरी करी बडाई। सो हमसे वह कही न जाई ॥ धन्य जनम तेरो अवतार। धन्य मात तेरी जो सार ॥ फिर महिपाल सेठ कर जोर। सुन्दरिसे तब करत निहोर ॥ चूक माफ मेरी अब करो। तुम चल घरमेंअबपग धरो ॥ जाके राग दोष नहिं कोय। चलत भई तहांसे खुश होय ॥ जाय सास चरणन सिर नायो। सब परिवार मिलाप करायो। इहिविधिसों सुन्दरि घर आई। सेठनें कीन्ही फेर बधाई ॥ श्रीजिनभवन सो पूज रचाय ॥ वसुविधिसे तहां द्रव्य चढाय। जाचक जनको दान जो दियो। सज्जन जन सनमान जो कियो

आनंद भेरि सेठ बजवाई । लाखों द्रव्य खर्च करवाई ॥ ये तो बात वहुतसी होय । शीलस-मान और नहिं कोय ॥ शीलहितैं हरि हर पद पाय । चक्री पद लहै शील सहाय ॥ बहुत बातको कहै बढाय । होय शीलतें त्रिभुवनराय । शीलहितें इन्द्रासन पावै । शीलहितें अहमिंदर होवै ॥ यातें नर नारी सुन लीजे । नित प्रति शीलप्रतिज्ञा कीजे ॥ शील समान और नहिं कोय । जासों अजर अमर पद होय ॥ जाघर शील धुरंधर नार । सो घर सदा पवित्र निहार ॥ जाघर व्यभिचारिन त्रिय होय । ताघर सूतक सदा जो होय ॥ शील समान धरम नहिं कोय शीलहिं सार जगतमें होय ॥ जाके शील नहीं लवलेश । ताजन घर दारिद्र हमेश ॥ सो सुन लीजे सब नर नार । करिये शीलप्रतिज्ञा सार । शीलकथा यह पूरण भई । भारामल्ल प्रगट कर कही ॥ भूल चूक अक्षर जो होय । पण्डित शुद्ध करो सब कोय ॥ मैं मतिहीन अहौं अ-

तिकार। क्षमा करौ बुधजन नरनार॥ पढै सुनै अब जो मन लाय। जनम जनमके पातक जाय। दुख दरिद्र सब जाय नसाय। जो यह कथा सुने मन लाय॥ पुत्र कलत्र बढै परिवार। पावै सुक्ख बहुत अधिकार॥

दोहा।

शीलकथा पूरण भई, पढौ सुनो सब कोय।
दुख दरिद्र नाशैं सबै, तुरत महा सुख होय॥

इति श्रीशीलकथा भाषा समाप्ता।

प्रकाशक—

पन्नालाल बाकलीवाल,

महामंत्री—भारतीयजैनसिद्धांतप्रकाशिनी संस्था,

८ महेंद्रबोसलेन, श्यामबाजार-कलकत्ता।

मुद्रक—

श्रीलालजैन काव्यतीर्थ

जैनसिद्धांतप्रकाशक पवित्र प्रेस,

८ महेंद्रबोसलेन, श्यामबाजार-कलकत्ता।